GSVM Medical College, Kanpur

PREVOUS YEARS PROGRESS

Academic Courses

S. No.	COURSE	2021	2025
1	UG Seats	250	250
2	PG Seats	135	181
3	DNB Pediatrics Surgery	-	01
4	FNB (Spine Surgery)	-	02
5	Paramedical Courses	250 (3 Courses)	1025 (26 Courses)

21 Departments, Six Lecture theatres, Dedicated Labs & Library

- Total 6 LT
- With smart boards installation

Biochemistry Lab

Pathology Lab - Renovated

HOT PLATE

HOT PLATE SERVE THE FUNCTION OF SAFE AND CONTROLLED HEATING SOURCE FOR HEATING SOLUTIONS SAMPLES AND FOR CHEMICAL REACTIONS

FULLY AUTOMATED SLIDE STAINER

A FULLY AUTOMATED SLIDE STAINER AUTOMATES THE PROCESS OF STAINING TISSUE SECTIONS ON SLIDES, REDUCING MANUAL LABOUR AND CONSISTENT STAINING RESULTS FOR MICROCOPIC EXAMINATIONS IN PATHOLOGY.

AUTOMATED TISSUE PROCESSOR

AN AUTOMATED TISSUE PROCESSOR - AUTOMATES THE PROCESS OF PREPARING TISSUE SAMPLES FOR MICROSCOPIC ANALYSIS - STEPS LIKE

- FIXATION
- DEHYDRATION

- IMPROVING EFFICIENCY AND ACCURACY

TISSUE EMBEDDING STATION

IT HELPS TO PREPARE TISSUE SAMPLES FOR MICROSCOPIC ANALYSIS BY EMBEDDING THEM IN A SOLID MEDIUM TO FACILITATE SECTIONING AND EXAMINATION.

ROTARY MICROTOME

ROTARY MICROTOME IS USED TO PREPARE THIN, UNIFORM SECTIONS OF BIOPSIES FOR MICROSCOPIC EXAMINATION. IT GIVES FAST AND EFFICIENT RESULTS.

LABORATORY CENTRIFUGE MACHINE

IT HELPS IN SEPARATING SUBSTANCES BY DENSITY OF BLOOD COMPONENTS, CELL ORGANELES, PROTEINS AND NUCLEIC ACIDS.

LABORATORY REFRIGERATOR

IT IS USED TO STORE VARIOUS CHEMICAL AT ADEQUATE TEMPERATURE TO MEET REQUIREMENTS OF SCIENTIFIC RESEARCH AND HEALTHCARE WHICH HELPS IN PROTECTING SUBTANCES

MICROBIOLOGY LPA-2 LAB

RENOVATED EXAMINATION HALL

Dedicated hostels for Girls & Boys

UG Girls Hostel Renovated

PG Hostel Renovation

GIRLS AND BOYS HOSTEL UNDER CONSTRUCTION

Multidisciplinary Research Unit - MRU

- Oldest MRU amongst State Medical College
- Doing regular research activities

Flocytometer

Ophthalmology

International Patent for Suprachoroidal Needle

रेटिना के अंदर तक दवा पहुंचाएगी निडिल, दूर होगी रतौंधी

जास, कानपुर : अब रतौंधी आंखों की रोशनी नहीं छीन पाएगी। रतौंधी के मरीजों के लिए जीएसवीएम मेडिकल कालेज के नेत्र रोग विभाग के प्रोफेसर परवेज खान ने विशेष निडिल (सुई) का आविष्कार किया है। आंखों में रेटिना के अंदर हर परत तक दवा पहुंचाने में सक्षम निडिल अभी तक दुनिया में उपलब्ध नहीं थी। वर्ष 2018 में आविष्कार के बाद निडिल के अंतरराष्ट्रीय पेटेंट के लिए केंद्र सरकार के माध्यम से आवेदन किया गया था। पांच साल तक देश-दुनिया के संस्थानों से सत्यापन के बाद निडिल को 20 साल के लिए पेटेंट मिल गया।

20 वर्ष के लिए मिला पेटेंट देश-दुनिया के प्रतिष्ठित संस्थानों से सत्यापन के बाद

जन्मजात बीमारी रतौंधी में रेटिना की सेल्स खुद मरने लगती हैं। नसें सूखने से आंखों की रोशनी कम होती जाती है। पांच से 15 वर्ष तक की उम्र के बच्चों में इसका असर पूरी तरह दिखने लगता है। वर्ष 2018 में मेडिकल कालेज के नेत्र रोग विभागाध्यक्ष रहे प्रोफेसर परवेज खान ने रतौंधी के चलते आंखों की रोशनी खो चुके मरीजों पर शोध शुरू किया। उन्होंने मरीजों के रक्त से प्लेटलेट्स रिच प्लाज्मा (पीआरपी) इंजेक्शन तैयार किया। इंजेक्शन को आंख के पर्दे (रेटिना) की नस से जुड़ी रोड और कोन सेल्स (कोशिकाओं) पर लगाना था, लेकिन दोनों नसें आंख के अंदरूनी हिस्से में होने से वहां पहुंचना संभव नहीं था। बाजार में भी ऐसी कोई निडिल नहीं थी। ऐसे में प्रो. परवेज खान ने खुद विशेष प्रकार की निडिल तैयार की, उससे रेटिना के अंदरूनी हिस्से में इंजेक्शन लगाने में भी कामयाबी मिली।

जीएसवीएम मेडिकल कालेज के नेत्ररोग के वरिष्ठ प्रोफेसर डा. परवेज खान के अंतरराष्ट्रीय पेटेंट प्रमाण पत्र दिखाते प्राचार्य प्रो. संजय काला व उप प्राचार्य प्रो. रिचा • जागरण

पेटेंट के बाद मिला नया नाम : प्रो. परवेज ने आविष्कार के बाद निडिल का नाम सुप्रा खोराइडल निडिल 500-900 माइक्रो यूनिट रखा था, जिसे पेटेंट में 'माइक्रो निडिल फार आयुतर ड्रग डिलिवरी' नाम दिया गया। केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने 10 अगस्त को पेटेंट का प्रमाण पत्र जारी किया।

अमेरिका में तीन निडिल बनीं, लेकिन अंदर नहीं जा सकतीं : प्रोफेसर के मुताबिक पेटेंट के लिए वर्ष 2018 में आवेदन किया था। दुनिया भर के संस्थानों से दावे के बारे में पूछा गया तो इससे मिलती जुलती तीन निडिल अमेरिका में मिलीं। इसके बाद पेटेंट से पत्र आया था, जिसमें पूछा गया कि यह अमेरिकी निडिल से कैसे अलग है। उसका जवाब भेजा गया कि किसी भी अमेरिकन निडिल से रेटिना के अंदरूनी हिस्से तक पहुंचना संभव नहीं है।

GSVM IS THE ONLY MEDICAL COLLEGE IN THE STATE TO GET TWO INTERNATIONAL PATENTS IN YEAR 2023-24

भविष्य को पोषित कर रहा अमृत डाइट, अब घर–घर पहुंचेगा

- कुपोषण से जंग में जीएसवीएम को मिला रिपब्लिक आफ दक्षिण अफ्रीका की एजेंसी का पेटेंट
- आइआइटी के साथ स्टार्टअप कर मेडिकल कालेज डाइट को घर-घर पहुंचाने की तैयारी में

जागरण संवाददाता, कानपुर : देश-विदेश में कुपोषण से जंग में जीएसवीएम मेडिकल कालेज का अमृत डाइट संजीवनी साबित हो रहा है। कुपोषण से जंग में रिपब्लिक आफ दक्षिण अफ्रीका की लीगल एजेंसी का पेटेंट हासिल कर चुका अमृत डाइट देश के साथ अब विदेशों में भी कुपोषित बच्चों के भविष्य को संवारने मददगार साबित होगा। मेडिकल कालेज की ओर से अब इसे घर-घर में पहुंचकर कुपोषण से जंग में हर घर को शामिल करने की योजना बनाई गई है। इसके लिए जीएसवीएम मेडिकल कालेज और आइआइटी अब एक साथ मिलकर स्टार्टअप करेंगे और कंपनी के माध्यम से अमृत डाइट को घर-घर पहुंचाएंगे।

गणेश शंकर विद्यार्थी स्मारक चिकित्सा महाविद्यालय (जीएसवीएम) के बाल रोग विभाग के डा. यशवंत राव अभियान चलाकर 700 से ज्यादा कुपोषित बच्चों को स्वस्थ कर चुके हैं। ये अपने हाथों से बना 'अमृत' नाम का पौष्टिक आहार गांव-गांव वितरित कर रहे हैं। वे बिधनू ब्लाक के कसिगवां गांव में बीस अतिकुपोषित बच्चों को गोद लेकर उनको कुपोषण से बचा चुके हैं। इससे उनके अमृत डाइट को देश में पहचान मिली। उन्होंने बताया कि सरकार अतिकुपोषित बच्चों पर तो ध्यान देती है, लेकिन अभिभावक की अनदेखी उन पर भारी पड़ जाती है। मूल रूप से देवरिया निवासी डा. यशवंत राव ने जीएसवीएम मेडिकल कालेज से 1999 में एमबीबीएस और फिर 2004 में केजीएमयू लखनऊ से एमडी पीडियाट्रिक्स की पढ़ाई पूरी की। 2006 से यह मेडिकल कालेज के बाल रोग विभाग में सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि करीब चार वर्ष पहले एक डाटा जानकारी में आया कि कानपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में 12 हजार अतिकुपोषित बच्चे हैं। उस समय प्रशासन द्वारा बुलाई गई बैठक में इस बात पर चिंता जताई गई कि जब पौष्टिक आहार (पंजीरी) वितरण, वजन दिवस की सरकारी योजनाएं चल रही हैं तो कुपोषण दूर क्यों नहीं हो रहा है। तब चिकित्सक की ओर से अमृत डाइट को बनाया गया। जो अब बच्चों के लिए संजीवनी साबित हो रहा है।

डा. यशवंत राव द्वारा कुपोषित बच्चों के लिए गया तैयार अमृत आहार • स्वयं

12 हजार अतिकुपोषित बच्चे कानपुर और आसपास क्षेत्रों में होने की जानकारी मिली चार वर्ष पहले

89 प्रतिशत बच्चों में अमृत डाइट का लाभ दिखाई दिया करीब 1200 बच्चों पर हुए ट्रायल के बाद

7 सौ से ज्यादा कुपोषित बच्चों को स्वस्थ कर चुके हैं बाल रोग विभाग के विशेषज्ञ अभियान चलाकर

ऐसे बनाया गया अमृत डाइट

250 ग्राम मूंगफली, 300 ग्राम भुना चना, 250 ग्राम दूध पाउडर लिया गया और तीनों को एक साथ मिलाकर पीसा गया। इसके बाद इसमें 200 ग्राम चीनी और 200 ग्राम काला देशी गुड़ मिलाया गया। फिर 150 से 200 ग्राम नारियल तेल को हल्की आंच में हल्का सा गर्म करके 20–20 ग्राम के लड्डू बनाए गए। यह पांच वर्ष तक के कुपोषित बच्चे को दिन में चार लड्डू खिलाने से दो महीने में बच्चा कुपोषण से बाहर आ जाता है। इसमें नारियल का तेल भी डाला जाता है, जो आसानी से पच जाता है। करीब 1200 बच्चों पर हुए ट्रायल के बाद 89 प्रतिशत बच्चों में इसका लाभ दिखाई दिया।

कुपोषण में संजीवनी अमृत डाइट

डा. यशवंत राव के मुताबिक, कुपोषित बच्चों के मामले में भारत नंबर वन पर है। कुपोषित बच्चों की संख्या शहर की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा है। कुछ समय पहले तक कुपोषित बच्चों की संख्या शहर में ज्यादा हुआ करती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अमृत डाइट को सामान्य डाइट के साथ दे सकते हैं। इस प्रोडक्ट को छह माह के बच्चे से लेकर किसी भी आयुवर्ग के बच्चों को दिया जा सकता है। पहले विटामिन और आयरन की दवा से कुपोषण से बचाया जाता था, लेकिन अब अमृत डाइट के प्रयोग से बच्चों में कुपोषण काफी हद तक कम हुआ है। विशेषज्ञों के मुताबिक, हर 10 वर्ष में एक प्रतिशत कुपोषित बच्चों की वृद्धि हो रही है। वर्ष 2005 में 6.1 प्रतिशत बच्चे देश में कुपोषण का शिकार थे। वर्ष 2015 में यह प्रतिशत 7.5 तक पहुंच गया।

डा. यशवंत राव • स्वयं

Lush Green College Campus

BH-2 LAWN

L-Block Park

LLR HOSPITAL

- STARTED IN YEAR 1944
- Total beds LLR-2072
- Super-speciality Beds - 278
- >1 LAKH PATIENTS / MONTH
- Total OPD/day-4000-5000
- Total IPD /day-350

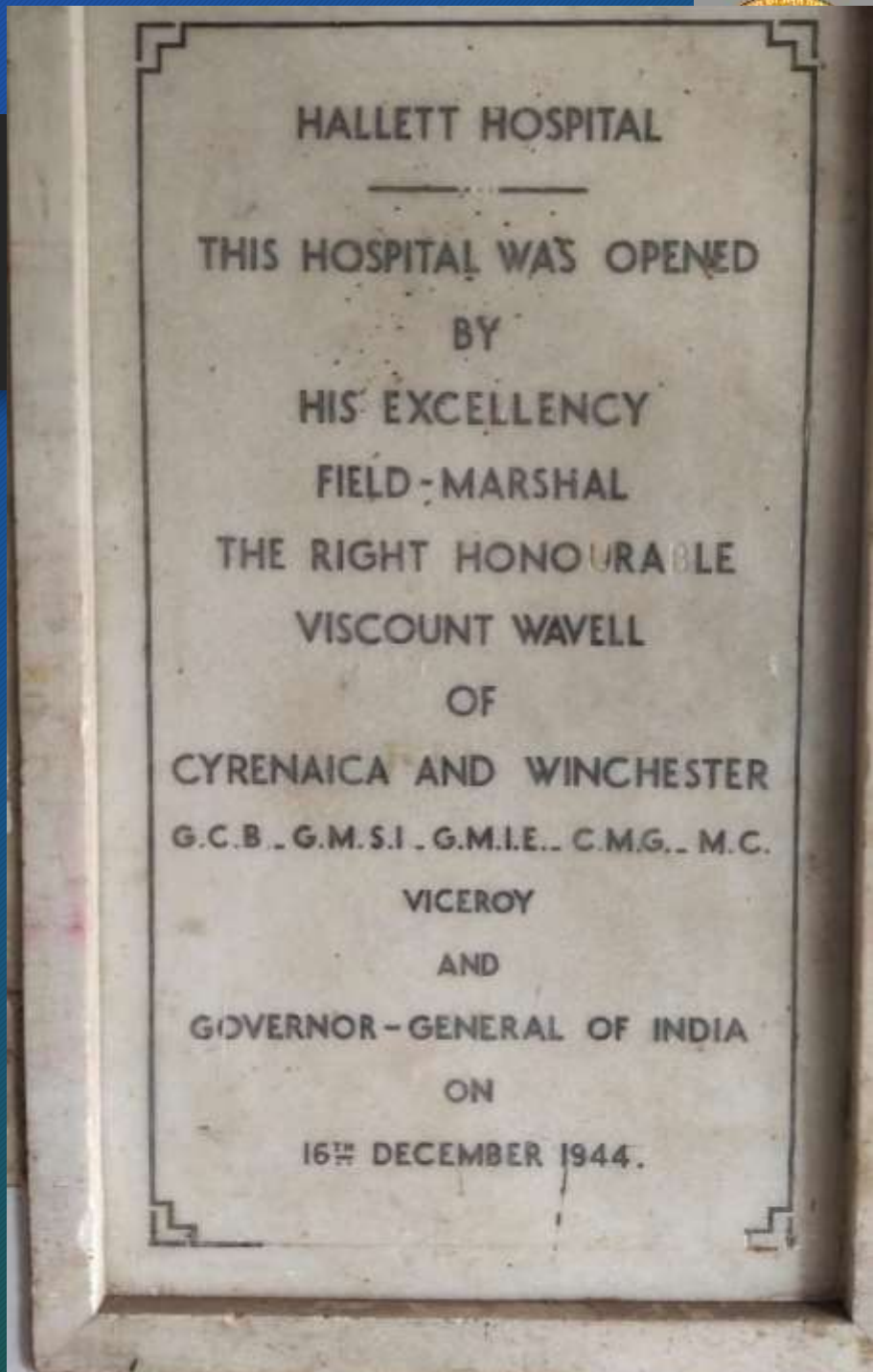

Manpower

S. No	POST	2021	2025	Increase
1	Faculty	234	390	156
2	Nursing Staff (ME)	59	1400	1341
3	Class III	162	883	721
4	Class IV	364	2008	1644
5	Security Guards	NIL	126	126
6	Army Guards	NIL	54 + 315 (369)	369

Nursing Staff from Health Department - 186

PATIENT LOAD

LLR & Associated Hospitals			Super-Speciality Block		
Year	OPD	IPD	Year	OPD	IPD
2024-25	11,21,251	90,995	Jan 25 - Mar 25	29,683 ongoing	9,601 ongoing
2023-24	10,70,327	83,135	Jan 24 - Dec 24	2,34,786	8,551
2022-23	8,27,917	53,538	-	-	-

Surgical Load

LLR & Associated Hospitals including Super-speciality Block (GSVSPGI)		
FY	Major Surgeries	Minor Surgeries
2024-25	12,014	1,14,816
2023-24	14,196	1,07,234
2022-23	8,908	56,025

Investigation Facilities

LLR & Associated Hospitals including Super-speciality Block (GSVSPGI)		
Year	Blood tests	Microbiology tests
2024-25	39,34,069	77,457
2023-24	34,16,016	56,995
2022-23	27,63,325	38,298

Radiology Investigations

	X-ray	CT- Scan	MRI
Department of Radiology	1,25,000 - 1,50,000	389 scans done till 17.04.2025	Nil as department does not have the machine
Super-speciality Hospital GSVSPGI	3,718 (from January 2025)	5,559 (from January 2025)	3,067 (from January 2025)
Lifeline CT Scan Centre (Approved by UP Govt.)	-	33,093	9,383

New Gate Construction - CSR

New Gate Construction near IDH – By Alumni

Separate parking for Doctors & Staff

- Avoiding Jam near OPD & Emergency

LLR Hospital - OPD BLOCK

- Central air conditioning
- Computerized OPD slip Counters
- E – hospital
- Drug counters – for free drug delivery

OPD BLOCK

EMERGENCY BLOCK

OPD Registration counter renovated with computerized OPD slip and BHT

New OPD Registration Counter

MRD Under Construction

OPD Chambers

PATHOLOGY

24 HRS PATHOLOGY

OPD RECEPTION COMPLEX

Emergency complex

ICU Building

MEDICINE-ICU

56 BEDDED

Medicine HDU

RED ZONE - from CSR

DEPARTMENT OF EMERGENCY MEDICINE – 24 BEDS

E - Ambulance - Novel Concept

ALS AMBULANCE - CSR

JAN AUSHADHI KE

For medicines at subsidized rates

DRINKING WATER RO CHILLER PLANT - CSR

MEDICINE

350 BEDDED, 25000 PATIENTS PER MONTH, SPECIALITY CLINICS

FACILITIES – DIALYSIS, ENDOSCOPY, ECHO, ECG,USG

Dialysis & HDU

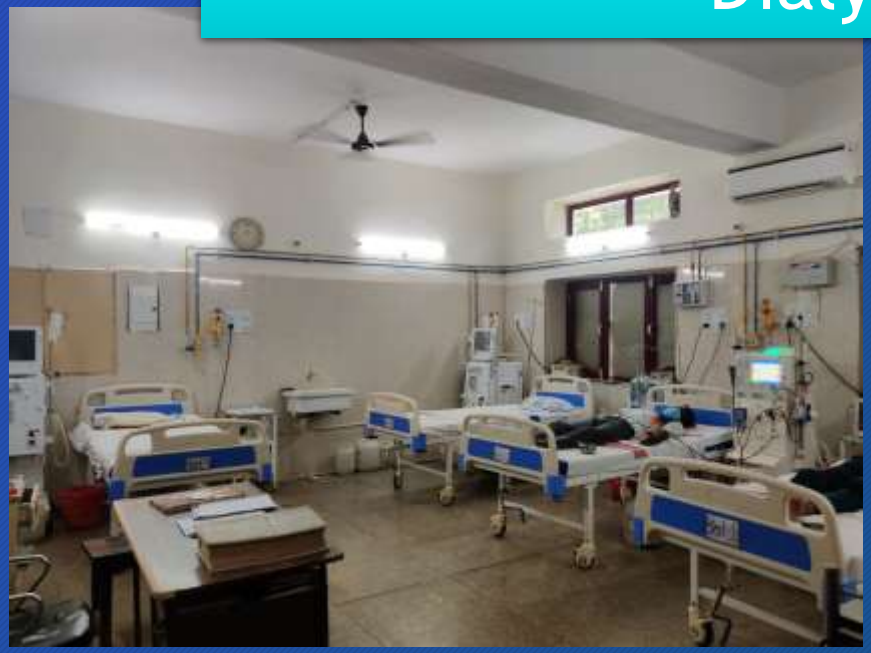

MEDICINE DEPARTMENT EXTENSION

FIRE SAFETY TANK CONSTRUCTION

SURGERY

SURGERY DEPARTMENT

Bariatric Surgery Centre

311 BEDDED,

LAPROSCOPIC,

MINIMALLY INVASIVE

SURGERY

Starting of Work station

3D - 4K System

कि शरीर को आरपार कर गई लोहे

- 02 घंटे तक हैलट में चली सर्जरी, अब खतरे के बाहर जान
- 06 डॉक्टरों की टीम के सामने बड़ी चुनौती थी

बुजुर्ग की हालत खराब थी। शरीर के आरपार लोहे की रॉड को निकालना व जान बचाने में डॉक्टर कामयाब रहे। अब बुजुर्ग की हालत खतरे से बाहर है।

डॉ आरके सिंह

NEW OPD AUDITORIUM

CAPACITY 300

BURN UNIT CONSTRUCTION IN PROGRESS

Ward Renovation

Sl	Name of Equipment	Required Unit	Unit Rate including GST (Rs.)	Total Amount (Rs.)
01	**Universal Ventilator** (Make: Hamilton Model : CI Universal)	07	12,00,000.00	84,00,000.00
02	**Neo Ventilator** (Make: Hamilton Model : CI Neo)	07	10,50,000.00	73,50,000.00
03	**Ventilator Humidifire**	14	99,000.00	13,86,000.00
04	**Split Air Conditioner** (2 Ton 5 Star rating)	20	60,000.00	12,00,000.00
05	**Fowler Bed Fully Motorised**	100	1,25,000.00	1,25,00,000.00
			Total :	**3,08,36,000.00**

Power Grid Corporation of India Ltd. द्वारा स्वीकृत धनराशि के क्रम में इस चिकित्सा

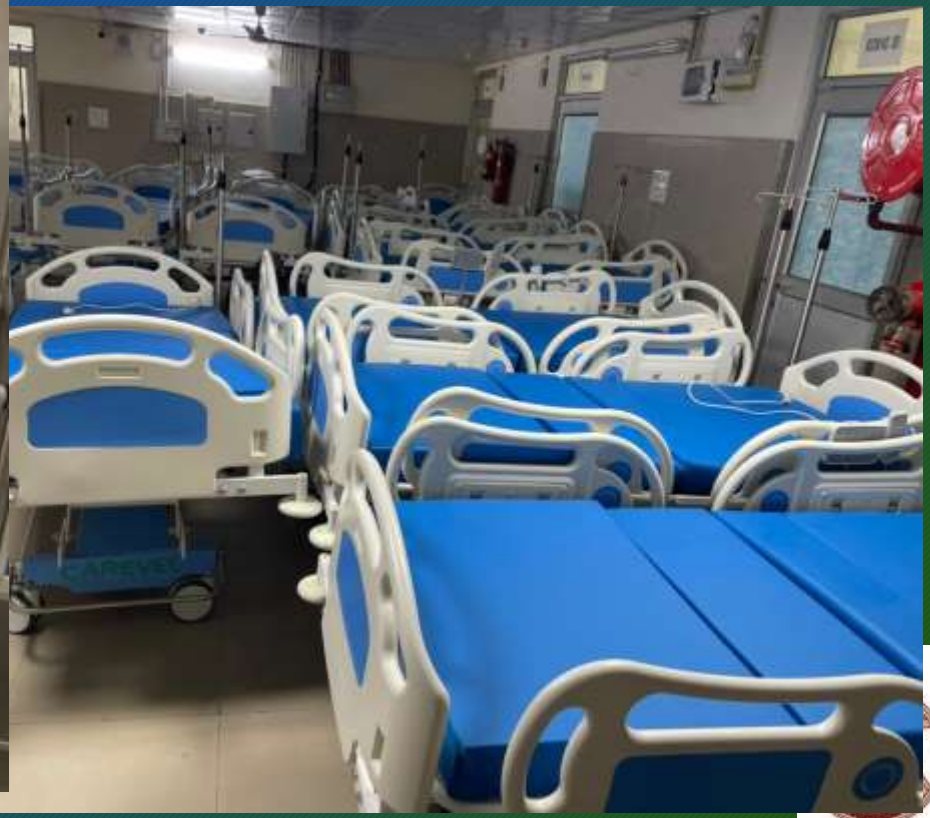

CT SCAN CENTRE

More than 1000 scans done since installation

SICK NEWBORN CARE UNIT(SNCU)

- 44 bedded well equipped with well trained staff.
- Around 2000 newborns per year.
- Have separate section for covid positive patients
- Kangaroo mother care room

Ophthalmology

EYE BANK

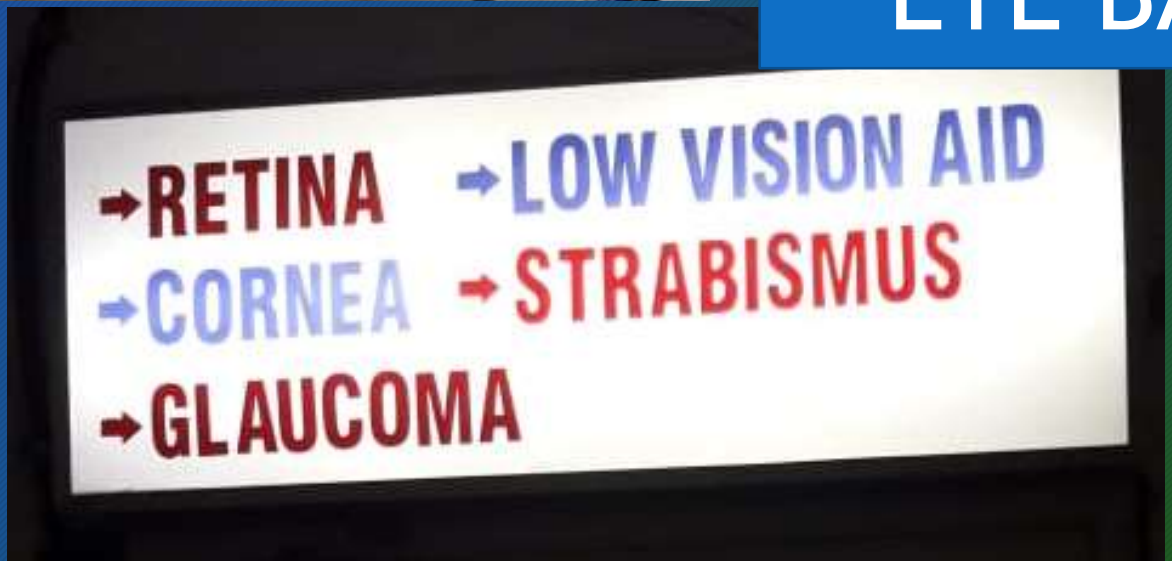

PHOTO SLIT LAMP AND APPLANATION TONOMETER INSTALLATION

RENOVATED EYE OT with Laser Facilities – from CSR

एलएलआर के नेत्र बैंक में 14 दिन तक कार्निया रहेगा सुरक्षित

जागरण संवाददाता, कानपुर : जीएसवीएम मेडिकल कालेज के एलएलआर अस्पताल में बने प्रदेश के पहले नेत्र बैंक में 14 दिन तक कार्निया को सुरक्षित रखा जा सकेगा। नेत्र बैंक में दान का पहला कार्निया 14 जनवरी को स्वर्गीय हरबंश सिंह का प्राप्त हो चुका है। नेत्र बैंक में दान के कार्निया को सुरक्षित रखने के साथ ही स्टाफ के प्रशिक्षण और चिकित्सकों को शोध में मदद मिलेगी। यहां 56 लाख रुपये की अत्याधुनिक मशीन की मदद से कार्निया की लेयरिंग की जाएगी और जरूरत के हिसाब से एक कार्निया को कई लोगों में प्रयोग किया जा सकेगा।

जीएसवीएम मेडिकल कालेज की नेत्र रोग विभागाध्यक्ष प्रो. शालिनी मोहन ने बताया कि डेस्सेक मशीन एक कार्निया को कई लेयर में विभाजित करने की क्षमतायुक्त होती है। इस मशीन से कार्निया को 550 माइक्रान से 100

लाला लाजपत राय चिकित्सालय में बना नेत्र बैंक● जागरण

प्रत्यारोपण बिना टांके के भी संभव हो जाएगा। अभी तक कार्निया को प्रत्यारोपित करने में 16 टांके लगाने पड़ते थे। उन्होंने बताया कि नेत्र बैंक में कार्निया के साथ ही आंख के अन्य टिश्यू सुरक्षित किए जा सकेंगे। उन्होंने बताया कि इसमें बच्चों की गर्भनाल को भी सुरक्षित रखा जा सकेगा। इसकी मदद से बच्चों में होने वाले रोग का अध्ययन आसान होगा। इससे आसपास के जिलों में बने कार्निया प्रत्यारोपण केंद्र भी नेत्र

PSYCHIATRY

PSYCHIATRY DEPARTMENT BUILDING CONSTRUCTION

Murari Lal Chest Institute

MURARI LAL T.B. & CHEST HOSPITAL

23
2

RESPIRATORY MEDICINE
I.C.U.
रेस्पीरेटरी मेडिसिन
आई०सी०यू०

PMSSY

12 Superspeciality Departments

240 bedded, 30 bedded ICU

8 Modular OT

State of Art Facility

Neurosurgery OT - PMSSY

Neurosurgery – Complex Spine Surgery

कुमार उपस्थित रहे।

हो चुका, सुरक्षा बढ़ेगी।

के माध्यम से भेजें।

कोबाल्ट के स्क्रू व प्लेट से सीधी की रीढ़ की हड्डी

- रीढ़ की हड्डी में टीबी से बच्चे को हुई थी कुबड़पन की समस्या
- जटिल सर्जरी कर न्यूरो सर्जरी विभाग ने बचाई जान

जागरण संवाददाता, कानपुर : एक वर्ष में ही 10 हजार से अधिक सर्जरी का कीर्तिमान स्थापित करने वाले जीएसवीएसएस पीजीआइ में हर दिन ब्रेन और स्पाइन की जटिल सर्जरी की जा रही है। यहां 18 जिलों से जटिल समस्या लेकर मरीज पहुंच रहे हैं। जीएसवीएसएस पीजीआइ के न्यूरो सर्जरी विभाग में काइफोस्कोलियोसिस यानी रीढ़ की हड्डी में टेढ़ापन से ग्रसित नौ वर्षीय बच्चे को नया जीवन दिया गया। स्पाइन सेंटर के रूप में विकसित हो रहे केंद्र में टीबी रोग के कारण रीढ़ में बने कूबड़पन को जटिल सर्जरी कर कोबाल्ट स्क्रू और प्लेट से सीधा किया गया।

न्यूरो सर्जरी विभागाध्यक्ष डा. मनीष सिंह ने बताया कि औरैया के दिबियापुर से नौ वर्ष के बच्चे को लेकर अभिभावक पिछले दिनों ओपीडी में आए थे। जिसकी प्राथमिक जांच में टीबी रोग के कारण रीढ़ की हड्डी में बने कूबड़ की समस्या मिली थी। गंभीर स्थिति में होने के चलते बच्चे का एक पैर निष्क्रिय हो रहा था। जांच में रीढ़ की हड्डी के गलने की समस्या भी सामने आई। इस कारण बिना देरी किए सर्जरी प्लान की गई।

उन्होंने बताया कि काइफोस्कोलियोसिस जैसे मामले बहुत कम सामने आते हैं लेकिन बीमारी के कारण हुए टेढ़ापन और हड्डी के गलने जैसी समस्या जटिल थी। इसलिए सर्जरी में कोबाल्ट के स्क्रू और प्लेट का प्रयोग कर रीढ़ की हड्डी को सीधा किया गया ताकि भविष्य में बच्चे को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। जटिल सर्जरी में उनके साथ एसोसिएट प्रो. डा. आंचल दत्ता और डा. शिवम रहे।

जीएसवीएसएस पीजीआइ में जटिल स्पाइन सर्जरी के बाद मरीज के साथ न्यूरो सर्जरी विभागाध्यक्ष डा. मनीष सिंह अपनी टीम के साथ • जीएसवीएम

ICU – PMSSY Block

EEG Lab- PMSSY

Gastromedicine Department - PMSSY

दो घंटे वाला ऑपरेशन सिर्फ 15 मिनट में

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। छह माह से पेट में दर्द और खाना खाने को मोहताज युवक को जीएसवीएसएस पीजीआई में जीवनदान मिला। गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट ने युवक का ऑपरेशन कर न सिर्फ उसकी जान बचाई, बल्कि दो घंटे चलने वाले इस ऑपरेशन को 15 मिनट में करके इतिहास रचा। एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड गाइडेड गैस्ट्रोजेजुनोस्टॉमी विधि से डॉक्टरों ने ऑपरेशन किया।

औरैया निवासी 27 वर्षीय युवक के पेट के अंदर थैली में पानी भर गया गया था, जिसकी वजह से उसे पेट में दर्द होता था और खाना खाने पर मुंह से बाहर निकल आता था। वह करीब तीन माह

टीम के साथ ऑपरेशन करते विभागाध्यक्ष डॉ.विनय कुमार। अमृत विचार

- एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड गाइडेड गैस्ट्रोजेजुनोस्टॉमी विधि से हुआ ऑपरेशन

आने पर युवक को ऑपरेशन की सलाह दी, लेकिन पेट में लंबा चीरा लगने के डर से उसने ऑपरेशन नहीं किया। समस्या अधिक होने पर वह सोमवार को दिखाने आया और डॉ.विनय ने डॉ.ध्रुव ठाकुर व टीम के साथ मिलकर युवक का एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड गाइडेड गैस्ट्रोजेजुनोस्टॉमी विधि से ऑपरेशन किया। डॉ.विनय ने बताया कि पेट में जाकर सिस्ट और 11 से 12 सेंटीमीटर थैली में भरे डेढ़ लीटर पानी को निकाला। यह सर्जरी 15 मिनट में की गई, जबकि ऐसे ऑपरेशन को करने में करीब दो घंटे तक का समय लगता है।

पहले जीएसवीएसएस पीजीआई (कानपुर पीजीआई) पहुंचा। यहां पर युवक ने गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.विनय कुमार से परामर्श लिया। डॉ.विनय ने अल्ट्रासाउंड व अन्य जांचें कराईं। दवाओं से स्थिति नियंत्रण में नहीं

हैलट में पहली बार बिना चीरा के किया अग्नाशय की गांठ का इलाज

मरीज का उपचार करते डॉ. विनय कुमार और उनकी टीम। स्रोत : मेडिकल कॉलेज

कानपुर। हैलट के मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में पहली बार बिना चीरा लगाए अग्नाशय की गांठ का इलाज किया गया। रोगी का इलाज गैस्ट्रोइंटोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. विनय कुमार ने किया।

औरैया के रहने वाले कौशल (26) को पैंक्रिटाइटिस हुआ था। वह इलाज से ठीक हो गए लेकिन कुछ दिन के बाद अग्नाशय के पास गांठ बन गई। रोगी को तकलीफ बढ़ती गई। गैस्ट्रोइंटोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. विनय ने बताया कि रोगी चार दिन पहले मल्टी सुपर स्पेशियलिटी में आया था। सीटी स्कैन कराने के बाद उसका इलाज इंडोस्कोपिक विधि से किया गया। कोई चीरा नहीं लगा। मुंह से इंडोस्कोप का पाइप डालकर स्टेंट के जरिये गांठ को खाने की थैली से जोड़ दिया गया। इससे गांठ का पानी पेट में आ गया। बाद में पेट से पानी निकाल दिया गया।

गांठ से करीब डेढ़ लीटर पानी निकला। रोगी को एक दिन के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। स्टील के डेढ़ लाख के स्थान पर सिर्फ सात सौ रुपये का प्लास्टिक स्टेंट लगाया गया। इलाज में उनके साथ डॉ. ध्रुव ठाकुर रहे। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय काला ने विशेषज्ञों को बधाई दी है। (ब्यूरो)

Liquid Medical Oxygen plants

- 5 LMO Plants (3 Plants 10KL,
- 02 Plants 20KL)

PRIVATE 50

PRIVATE 50

Future Projects.....

- Apex trauma center
- Critical care block
- Kidney Transplant Unit
- Smart city project – multilevel parking
- Milk Bank
- IKMC

Depiction of Apex Trauma Centre

Need of Future

To ensure the overall development of the Medical College and provide enhanced medical facilities to patients, there is a need to elevate the institution to the level of institutes like KGMU or RML Institute in Lucknow. A proposal for this transformation is currently under government consideration

Target is................

To Raise the bar further high

SKY IS THE LIMIT